भालू रहा भालू

वाणी प्रकाशन

वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
: अशोक राजपथ, पटना, (बिहार)

मूल्य : ₹35

संस्करण : 2011

लेखक : स. मर्शाक

अनुवादक : मदनलाल 'मधु'

चित्रकार : क. रोतोव

ISBN : 978-93-5000-552-1
Bhalu Raha Bhalu
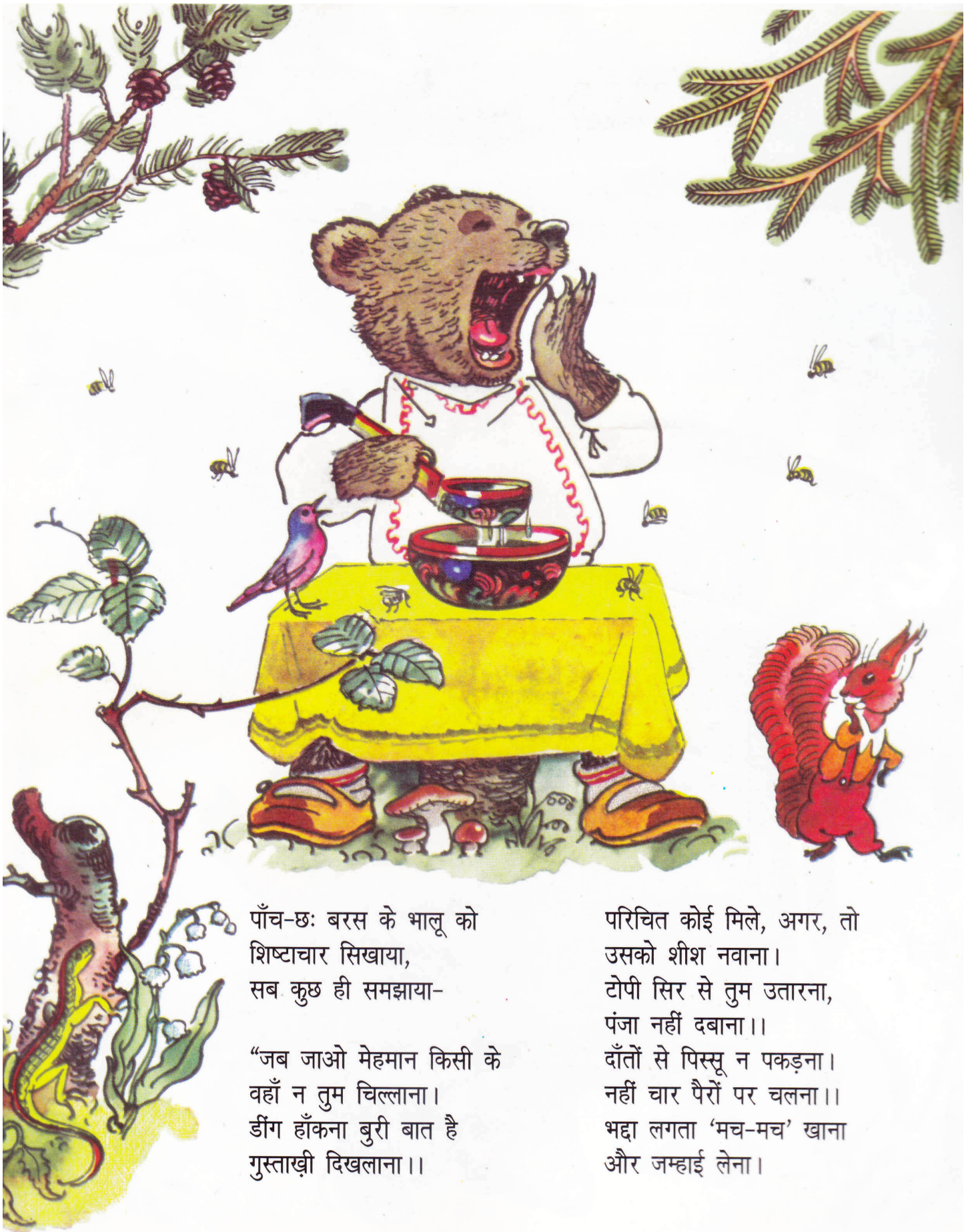
पाँच-छः बरस के भालू को
शिष्टाचार सिखाया,
सब कुछ ही समझाया-

"जब जाओ मेहमान किसी के
वहाँ न तुम चिल्लाना।
डींग हाँकना बुरी बात है
गुस्ताख़ी दिखलाना।।

परिचित कोई मिले, अगर, तो
उसको शीश नवाना।
टोपी सिर से तुम उतारना,
पंजा नहीं दबाना।।
दाँतों से पिस्सू न पकड़ना।
नहीं चार पैरों पर चलना।।
भद्दा लगता 'मच-मच' खाना
और जम्हाई लेना।

अगर जम्हाई आये ही तो
अपने खुले हुए जबड़े पर
तुम पंजा रख लेना।।
बनकर रहना आज्ञाकारी
तुम विनम्र भी बनना।
राह रोकना बुरा, बड़ों का
तुम आदर नित करना।।

धुंध घनी, जब बर्फ़ पड़ी हो
मुश्किल हो चल पाना।
तब नानी का हाथ थाम तुम
उसको घर पहुँचाना।।"
इसी तरह से इस भालू को
पाँच-छः बरस के भालू को
गया सिखाया शिष्टाचार।
सब से करना सद्व्यवहार।।
बना शिष्ट, बेशक बाहर से।
मगर रहा भालू अन्दर से।।
देख अड़ोसी और पड़ोसी
झटपट शीश झुकाता।
परिचित के मिल जाने पर वह
एक तरफ़ हो जाता।।
टोपी को उतार कर सिर से
आदर भाव दिखाता।
मगर अपरिचित मिल जाता तो
उसका पैर दबाता।।

जहाँ-तहाँ वह बेमतलब ही
अपनी टाँग अड़ाता।
घास रौंदकर, जई कुचलकर
मन ही मन इतराता।।

गाड़ी में लोगों के ऊपर
वह धम से गिर जाता।
'ख़ैर नहीं, हड्डी-पसली की'
बूढ़ों को धमकाता।।

पाँच-छः बरस के भालू को
गया सिखाया शिष्टाचार।
सब से करना सद्व्यवहार।।
मगर सिखाना और पढ़ाना
कुछ भी काम न आया।
रहा, अरे, भालू तो भालू
यों ही समय गँवाया।।